जो जैसा मनोरथ, करत है मन में ।
पूरन सब ही होत है, सोहबत मोमिनों से ॥१८॥

जो जैसी चाहना मन में लेता है, मोमिनों की कृपा से उनकी सब मुरादें पूरी हो जाती हैं ।

महामति कहे ए साथ जी, ए मेहर है हक ।
जैसा ईमान जिन का, होत तिन माफक ॥१९॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते है कि हे सुन्दर साथ जी ! यह श्री राज जी की मेहर तुम्हारे वास्ते हुई है । अब जिनका जैसा यकीन होगा, उसके अनुसार उसको वैसा ही फल मिलेगा ।

(प्रकरण १२, चौपाई ५०३)

दोनों स्वरूपों का मिलाप

श्री देवचन्द्र जी के अमल में, साथ को सुख हुआ अंग ।
तिनकी चरचा सुनते, मावत नाहीं उमंग ॥१॥

सदगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के समय में जब सुन्दरसाथ उनके मुखारबिन्द से बड़ी उमंग के साथ चर्चा सुनते थे, तो उनके सुख का पारावार नहीं था ।

गांग जी भाई सेवहीं, उच्छव रसोई नित ।
नई नई भांतों सेवहीं, हुआ अंग में उमंग इत ॥२॥

गांग जी भाई हर रोज नई से नई उच्छव रसोइयां अनेकों प्रकार से करते थे । उनको सेवा करने की अति उमंग थी ।

कोई नया जो आवहिं, बीच इन निज धाम ।
तो श्री देवचन्द्र जी सुख पावहीं, सो केता कहों इस ठाम ॥३॥

यदि चर्चा सुनकर निजानन्द सम्प्रदाय में कोई नया सुन्दर साथ आता था तो श्री देवचन्द्र जी को अपार सुख होता था, जिसका इस मुख से वर्णन नहीं हो सकता ।

कोई नए साथी को ल्यावहीं, समझाय के दीन में ।
तिन ऊपर राजी होवहीं, क्या नेकी करों इन सें ॥४॥

यदि कोई सुन्दरसाथ किसी को क्षर-अक्षर-अक्षरातीत के भेद समझा कर श्री देवचन्द्र जी के चरणों में लाता था तो श्री देवचन्द्र जी महाराज उस लाने वाले सुन्दर साथ पर बहुत प्रसन्न होते थे और सोचते थे कि मैं इसके साथ कौन सा उपकार करूं ।

Nijanand App

दिल में साथ आवन का, करे मनोरथ मन ।
आदर होवे तिनका, ए धाम की सैंयन ॥५॥

श्री देवचन्द्र जी के दिल में सुन्दरसाथ की जागनी के प्रति बहुत ही प्रबल चाहना रहती थी । जो नया सुन्दरसाथ आता था तो उसके साथ बहुत आदर का व्यवहार होता था कि यह हमारे परमधाम का साथी है ।

इन भोम में देखिया, साथ धनी श्री धाम ।
कौन ब्रत इनसों करों, पूरों मनोरथ काम ॥६॥

श्री देवचन्द्र जी के अन्दर यह भाव रहता था कि मुझे इस माया के अन्दर परमधाम का सुन्दरसाथ मिला है । मैं किस तरह इसके साथ व्यवहार करूं जिससे इसकी मनोकामना पूर्ण हो सके ।

इनको राजें भेजिया, देऊं धाम न्यामत ।
ए कौन भांतों सुख पावहीं, सोई करों मैं इत ॥७॥

इनको श्री राज जी महाराज ने ही माया से निकाल कर मेरे पास भेजा है तो मैं श्री राज जी महाराज के द्वारा दी हुई परमधाम की अखण्ड वाणी रूपी न्यामत इन्हें किस प्रकार समझाऊं जिससे इनके संशय मिट कर अखण्ड सुख प्राप्त हो सकें । मैं वही उपाय इनके साथ करूं ।

ए श्री धाम से आये, खेल माया का देखन ।
इनको खबर कछु नहीं, पर मैं पहिचानत सैंयन ॥८॥

परमधाम से खेल देखने के लिये ब्रह्मसृष्टि आई है और यहां आकर परमधाम, धाम धनी तथा मुझे भी भूल गई है । पर मैं तो जानता हूं कि ये मेरे परमधाम के सुन्दर साथ हैं ।

ए पड़े माया मिने, होय गये परबस ।
इनको समझावने, कौन लेवे जस ॥९॥

ये मोहसागर के माया जाल में आकर फंस गये है और माया के अधीन हो गये हैं । इनको मिथ्या माया से निकाल कर परमधाम और श्री राज जी की पहचान कराने का कौन यश लेगा ।

मैं बाहिर निकसों, ढूंढ के काढ़ों साथ ।
मोको श्री धाम धनीय ने, इनके पकड़ाये हाथ ॥१०॥

जागनी करते हुए मन में बड़ी उमंगें उठती हैं कि नगर-नगर में, गांव-गांव में हमारे सुन्दर साथ आकर भूल गए हैं । उनको निकालने के लिए मुझे बाहर जाना चाहिए । श्री राजजी महाराज ने इन सुन्दरसाथ को जगाने का कार्य मुझे सौंपा है ।

Nijanand App

तो यह मेहनत, मोकों करनी जरूर ।
तिस वास्ते साथ के आगे, चरचा का चलावें पूर ॥११॥

इसलिए मुझे इस जागनी के कार्य के लिए अवश्य मेहनत (परिश्रम) करनी चाहिये, यह भाव मन में ले कर सुन्दरसाथ के साथ चर्चा को बड़े आवेश से मरम खोल कर बताते हैं ।

नित्यानें चरचा होत है, सो केती कहों बीतक ।
साथ रहे नजर में, आज्ञा दई मोहे हक ॥१२॥

प्रतिदिन चर्चा होती है, जिसमें नए नए प्रमाणों से नई उमंग के साथ विस्तार पूर्वक समझाते थे, जिससे सबको भली भांति चर्चा समझ में आ जाए । वे सब पर एक भाव से प्यार करते थे । सब सुन्दर साथ की जागनी का कार्य उनके विचार में रहता था कि मेरे धाम के धनी ने मुझे इस कार्य के लिए आज्ञा दी है ।

अजबाई भतीजी मेघबाई की, रहे गांगजी के घर में ।
स्याम जी को ब्याही थी, हुई बातें इनसें ॥१३॥

श्री मेहराज ठाकुर की बड़ी भाभी जो हरवंश ठाकुर की धर्मपत्नी (मेघबाई) थी । उनकी भतीजी अजबाई गांग जी भाई के बड़े लड़के श्याम जी की धर्म-पत्नी थी । इस सांसारिक नाते से वह अपनी बुआ मेघबाई से प्रायः चर्चा की बातें किया करती थी ।

मेघबाई हरबंस के, आवे अज बाई ।
देखे गांगजी के घर में, राज की मेहरबानगी आई ॥१४॥

अजबाई प्रायः अपनी बुआ मेघबाई के घर आती है और जो कुछ अपनी ससुराल, गांगजी भाई के घर में श्री राजजी महाराज की मेहर बरसती है, उसका वर्णन करती है ।

राज नित देवें दीदार, आरोगें बेर तीन ।
वस्ता मांगे आरोगते आज, क्यों फीकी खारी कीन ॥१५॥

और बताती हैं कि हे बुआ ! अक्षरातीत श्री राजजी महाराज नित्य आकर हमें दर्शन देते हैं और तीन बार हमारे घर में आरोगते हैं । आरोगते समय आरोगने की वस्तुएं भी मांगते हैं । यदि भोजन फीका या तीखा हो जाता है तो हमें प्यार से टोकते हैं ।

तंबोलदे आरोगते, और मिठाई कै भांत ।
जमुना जल अलाखल, चल दिखावें एकान्त ॥१६॥

आरोगते समय हमें प्रसाद देते हैं और कई प्रकार की मिठाई भी अपने साथ लाते हैं । श्री जमुना जी का वर्णन करते समय उनका अलाखल जल भी बहते हुए देखते हैं । चलो ! हम चलकर आपको भी दिखाएं।

Nijanand App

सैंयन को कंचन की, एक दिन कंसेड़ी दई ।
कोई दिन कछु देवहीं, यों करें नित सादी ॥१७॥

एक दिन हमको सोने की कंसेड़ी भी लाकर दी थी । कभी कुछ लाकर देते हैं तो कभी कुछ लाकर देते हैं । इस प्रकार नित्य ही आनन्द मंगल होता है । तुम भी चल कर देखो ।

अजबाई नित बातें करें, दीदार धनी निरधार ।
हम तो नित देखत हैं, तुमहूं करो दीदार ॥१८॥

अजबाई हर रोज आकर श्री राज जी के दर्शनों की प्रसन्नता भरी बातें और आनन्द मंगल भरी लीला का वर्णन करती हैं और कहती हैं कि हे बुआ ! हम तो नित्य देखते हैं । आप भी चलकर दर्शन करो।

तब मेघबाई ने कही, जाओ गोवर्धन तुम ।
ल्याओ खबर इनकी, फेर बुलाय ले जाओ हम ॥१९॥

मेघबाई इस तरह की अद्‌भुत और अलौकिक बातों को सुनकर अपने देवर गोवर्धन ठाकुर को देखने के लिए भेजती है कि जाओ ! देखकर आओ ! यदि यह बात सत्य होगी तो मैं भी चलूंगी ।

पद्‌मा स्त्री गोवर्धन की, सो पहिले गई सोहबत ।
तिन भी आये बातें करी, मैं देखी लीला इत ॥२०॥

गोवर्धन ठाकुर जी ने अपनी धर्मपत्नी पद्‌मा को इन सभी लीलाओं के दर्शन करने के लिए भेजा । उसने भी आकर उन सभी लीलाओं का यथार्थ (ज्यों का त्यों) रूप में वर्णन किया ।

तब गोवर्धन गये, जाय के लगे कदम ।
मैं सरन तुम्हारे आइया, जगावने आतम ॥२१॥

तब गोवर्धन ठाकुर स्वयं गये और सद्‌गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के चरणों में शीश झुकाया और विनती की कि हे मेरे धनी ! मैं आपकी शरण में आया हूं । मेरी आतम को जगाओ ।

सम्बत सोलह सौ सतासिया, ए कार्तिक में मजकूर ।
यहां सेती उदय भई, उदया मूल अंकूर ॥२२॥

संवत् १६८७ के कार्तिक माह में ये प्रसंग हुआ और फिर गोवर्धन ठाकुर के द्वारा ही इस परिवार में अखण्ड वाणी की चर्चा का अंकूर जागृत हुआ ।

Nijanand App

चुगली खाई कोतवाल सों, एक कायस्थ के घर ।
जोरू मर्द बैठत हैं, तुम क्यों न लेत खबर ॥२३॥

अब उधर माया का भी संसार में बड़ा प्रबल वेग चलता है । किसी चुगलखोर व्यक्ति ने कोतवाल को जा कर चुगली की कि गांगजी भाई कायस्थ के घर में कथा के बहाने से दिन-रात स्त्री और पुरूष बैठते है जो कि सामाजिक दृष्टि से ठीक नहीं है । तुम उसकी जांच पड़ताल क्यों नहीं करते ?

दोय चोपदार पठवाय दिये, तुम जाय ल्याओ बात ।
मोसों आय जाहिर करो, जो कछू होय विख्यात ॥२४॥

कोतवाल ने यह सुनते ही दो सिपाहियों को इसकी जांच के वास्ते भेज दिया और कहा कि वहां की सब हकीकत आकर मुझे बताओ ।

सो चुगल दिखाय पीछे फिरा, ए चले जायें सामे दीपक ।
छेह न आवे तिनका, जहां लगे मन सक ॥२५॥

उस चुगलखोर ने उन दोनों को लाकर गांगजी भाई का घर दिखा दिया और स्वयं पीछे हट गया। संध्या का समय होने के कारण से उन्होंने वहां एक दीपक जलता हुआ देखा । जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गये, दीपक भी आगे की ओर बढ़ता गया और उसके ठौर ठिकाने का पता न चल सका ।

एक फिरा कुंए पर, चार पहर रात ।
दूजा बारह कोस का, पन्थ किये जात ॥२६॥

गांगजी भाई का घर तो एक ठौर रह गया । उन दोनों सिपाहियों को दीपक दिखता है और वे दोनों सिपाही दीपक के पीछे पीछे चलते जाते हैं । एक तो सारी रात एक कुंए के ही चारों ओर परिकरमा करता रहा तथा दूसरा नवतनपुरी के बाहर सीधा बारह कोस चलता गया ।

जाय निकसा धरोल में, तहां भई फजर ।
पूछा पनिहारी को, मैं कौन गांव देखत नजर ॥२७॥

और प्रातः तक धरोल राज्य में पहुंच गया, तो क्या देखता है कि वहां कुंए पर एक पनिहारिन पानी भर रही थी । इससे उसने पूछा कि मैं कौन से गांव में पहुंच गया हूं ?

कैसी बात कहत है, के ज्यों होत दिवाना ।
सहर मोहबड़जीय का, तैने जान्या अपना ॥२८॥

तब उसने बताया कि तुम यह कैसी दिवानों जैसी बातें करते हो । यह मोहोवड़ जी का गांव है । तुमने अपना समझ लिया है क्या ?

Nijanand App

खिसियाय के पीछे फिरा, आया मुरक के घर ।
घर में बड़ी दुचिताई, लगी लड़ाई लग फजर ॥२९॥

वह सिपाही शर्मसार हो लौट कर वापस घर आया । उन दोनों सिपाहियों के घरों में उनकी गैर हाजिरी से भ्रान्ति हो जाने के कारण लड़ाई हो रही थी ।

दोनों के घर में, बड़ा जो पड़िया सोर ।
एक दूजे को पूछत, कहो खबर कछु और ॥३०॥

दोनों सिपाहियों के घरों में उनके न आने से बड़ा शोर मचा हुआ था और बार-बार वे एक दूसरे से आने की खबर पूछ रहे थे ।

फजर को आय के, दोनों कही बीतक ।
इन चुगलें हमको मारिया, ल्याया दिल में सक ॥३१॥

प्रातः काल होते ही जब वे दोनों सिपाही वापस घर आये तो दोनों ने अपनी रात की घटना सुनाई जिससे दोनों के दिल में संदेह हो गया कि यह चुगलखोर हमें मरवाना चाहता था ।

आये कोतवाल से कहया, बातें करी बनाय ।
जो चुगल हमको मिले, तो मारे गरदन तायें ॥३२॥

दोनों सिपाहियों ने कोतवाल को आकर अपनी बीती घटना सुनाई और यह स्पष्ट कह दिया कि यदि वह मिल जायेगा तो हम उसे अवश्य मार डालेंगे ।

हमको इन चुगल ने, मार डारे आज ।
जागा ऐसी बताई, सूझे न कोई काज ॥३३॥

दोनों ने कहा कि हमको इस चुगल ने ऐसे खतरे का स्थान बता दिया जहां हमारी सुध-बुध ही नहीं रही । बड़ी मुश्किल से हम बच गये और वापस आये । अब हम उसे अवश्य मार डालेंगे ।

इन भांत कै माजिजे, और लाखों दिये निसान ।
पर साथ कोई न समझे, कछू न हुई पहिचान ॥३४॥

नवतनपुरी में सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के समय में अनेकों चमत्कार होते रहते थे । ग्रन्थों से क्षर-अक्षर-अक्षरातीत के भेदों की अनेकों प्रमाणों से अद्‌भुत चर्चा भी होती थी । परन्तु सुन्दरसाथ के संशय नहीं मिटे और उन्हें किसी भी प्रकार की पहचान नहीं हुई ।

Nijanand App

सम्बत सौलह सौ पचहतरा, भादों वदि चौदस नाम ।
प्रथम जाम और बार रवि, प्रगटे धनी श्री धाम ॥३५॥

संवत् १६७५ में भादों मास की चौदस वाले दिन प्रातः ९ बजे रविवार को श्री केशव ठाकुर के घर श्री मेहराज जी का जन्म हुआ जिनके तन में अक्षरातीत श्री राजजी महाराज प्रगटे ।

हलार देस पुरी नौतन, उदर बाई धन ।
केसव ठाकुर पिता कहियत, तहां श्री राज प्रगटन ॥३६॥

हलार देश नवतनपुरी में श्री मेहराज ठाकुर का जन्म श्री केशव ठाकुर और माता धनबाई के घर हुआ। उस तन में श्री इन्द्रावती जी की आतम ने प्रवेश किया और धाम के धनी प्रगटे ।

सब भाई भेले रहत हैं, सामल जी तन में सिरदार ।
बड़ा गोवर्धन कहूया, जो धाम लीला में खबरदार ॥३७॥

श्री केशव ठाकुर के पांचों पुत्र एक ही परिवार में इकट्ठे रहते थे । सांसारिक नाते से सांवल जी बड़े थे । गोवर्धन ठाकुर वैसे भी बड़े थे और उनको श्री राज जी महाराज के चरण भी पहले प्राप्त हुए ।

श्री देवचन्द्र जी पुरी नवतन, आये इहां बसत ।
सेवा गोवर्धन करें, पहुंचा नजीक बखत कयामत ॥३८॥

श्री देवचन्द्र जी नवतनपुरी में ही श्री गांग जी भाई के घर आकर रहने लगे थे । श्री गोवर्धन ठाकुर उनको धाम के धनी जान कर सेवा करते थे और सेवा करते करते ही उनका धाम गमन हो गया ।

पहिले मिलाप गोवर्धन का, श्री देवचन्द्र जी से ।
तहां श्री राज के दीदार की, बातें करें घर में ॥३९॥

इस परिवार में से सबसे पहले गोवर्धन ठाकुर ने श्री देवचन्द्र जी महाराज के चरणों में शीश झुकाया। वहां पर श्री राज जी महाराज के दर्शन और जो लीला होती थी उसका सब वर्णन श्री गोवर्धन ठाकुर अपने घर में सुनाते थे ।

तब कहूया गोवर्धन को, मोहे ले जाओ तुम ।
कहूया ए मोसों न होवहीं, बिना श्री देवचन्द्र जी के हुकम ॥४०॥

ऐसे अद्‌भुत और अलौकिक ज्ञान की चर्चा को सुन कर श्री मेहराज ठाकुर जी की आतम तड़प उठी और श्री गोवर्धन ठाकुर से उन्होंने कहा कि मुझे भी अपने संग ले चलो । तब श्री गोवर्धन ठाकुर ने उत्तर दिया कि मैं श्री देवचन्द्र जी की आज्ञा के बिना आपको नहीं ले जा सकता ।

Nijanand App

तब गोवर्धन के संग, चले श्री मेहेराज ।
तहां हाथ छुड़ाय के गये, तित रोय गिरे इन काज ॥४१॥

तब एक दिन अपने भाई गोवर्धन ठाकुर के पीछे-पीछे चर्चा सुनने के लिए रोकने पर भी चले गए। वहां गांग जी भाई के घर के निकट पहुंचने पर गोवर्धन ठाकुर हाथ छुड़ाकर अन्दर गए और मेहराज ठाकुर नीचे गिर गए ।

अरज करी गोवर्धन ने, श्री देवचन्द्र जी सों आय ।
आज रोय के पीछे लगे, तब भाग के आया धाय ॥४२॥

तब गोवर्धन ठाकुर जैसे ही श्री देवचन्द्र जी के चरणों में गए और बताया कि मेरा छोटा भाई चर्चा सुनने के लिए रोता-रोता मेरे पीछे भाग आया है और बाहर खड़ा रो रहा है ।

तब आज्ञा दई श्री देवचन्द्र जी ने, ल्याओ बुलाय श्री मेहेराज ।
बाल वय वस्त आवत, सो होवे पूरन काज ॥४३॥

तब तुरन्त श्री देवचन्द्र जी ने आज्ञा दी कि मेहराज ठाकुर को अन्दर ले आओ । बाल्यावस्था में हृदय निर्मल होने के कारण आत्मा जल्दी जाग्रत हो जाती है और सब मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं ।

ध्रुव को चरन भगवान के, भये पांच बरस सों प्रापत ।
तिस वास्ते श्री मेहेराज को, आवन देओ तुम इत ॥४४॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि बाल्यावस्था की तुम चिन्ता न करो । ध्रुव भक्त को तो पांच साल की आयु में ही भगवान के चरण प्राप्त हो गए थे इसलिए श्री मेहेराज ठाकुर को अन्दर ले आओ ।

तब गोवर्धन श्री मेहेराज को, लेके चले साथ ।
तब आय चरनों लगे, सिर पर धरे हाथ ॥४५॥

तब गोवर्धन ठाकुर बाहर गए और श्री मेहेराज ठाकुर को अन्दर लेकर आए । श्री मेहेराज ठाकुर जी ने जैसे ही आकर चरणों में अपना शीश रखा तो श्री देवचन्द्र जी ने मेहर से भरपूर दोनों हाथ सिर पर रखते हुए आशीर्वाद दिया ।

बारह बरस महिना दोय, ता ऊपर भये दस दिन ।
तब श्री देवचन्द्र जी सों मिले, उन पहिचाने मोमिन ॥४६॥

श्री मेहराज ठाकुर जी की आयु १२ वर्ष २ महीने और १० दिन की हो गई थी । तब श्री देवचन्द्र जी के तन में विराजमान श्री राजजी महाराज ने उन्हें देखते ही पहचान लिया कि श्री मेहराज जी के तन में श्री इन्द्रावती जी की आत्मा है ।

Nijanand App

मिलाप श्री देवचन्द्र जी का, सोहबत श्री जी साहिब ।
सम्वत् सोलह सै सतासिय में, सो सत्रह सौ बारोत्तर लों अब ॥४७॥

१६८७ में श्री मेहेराज ठाकुर श्री देवचन्द्र जी के चरणों में गए और उनका मिलाप हुआ । सम्वत् १७१२ तक उनकी सोहबत में रहे ।

सम्बत् सोलह सो सतासिया, मागसर सुदि नौम ।
मिलाप श्री देवचन्द्र जी सों, भए दाखिल कौम ॥४८॥

सम्वत् १६८७ में अगहन (मगसर) सुदि वाले दिन श्री मेहराज ठाकुर सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के चरणों में गये और सुन्दर साथ में शामिल हुए ।

बारह बरस मास दोय, ऊपर भए दिन चार ।
तब से मिलाप का, बातून हुआ विचार ॥४९॥

जब १२ वर्ष २ माह और ४ दिन की उनकी आयु हुई थी तो उनके दिल में मिलने की चाहना हो चुकी थी ।

आय के चरणों लगे, तबहीं दई निध ।
ततखिण हिरदे मिने, आय बैठी जागृत बुध ॥५०॥

जिस दिन उन्होंने चरणों में आकर शीश झुकाया था उसी समय श्री राजजी महाराज ने मेहर करके परमधाम की न्यामत, जागृत बुद्धि उनके हृदय में बिठा दी ।

साकुण्डल सकुमार ढूंढन की, एकान्त होए सुनाई बात ।
मूल सरूप उनके हंसत हैं, ओ खेल में हैं अपनी जात ॥५१॥

फिर धीरे धीरे एकान्त में बैठकर श्री देवचन्द्र जी महाराज उन्हें भविष्य में होने वाली घटनाओं की जानकारी देने लगे कि साकुंडल और साकुमार की परआतम परमधाम में हंस रही है । ये निश्चय ही किसी राज परिवार में होंगी । इन्हें तुम्हें जगाना है । ये अपनी खास आत्मायें हैं ।

तब ए चित में ग्रह लई, इसारत उन बखत ।
और बीज कुरान का, सो देखी श्री देवचन्द्र जी में तित ॥५२॥

इन सब बातों को उन्होंने चित में रख लिया तथा यह भी देखा कि श्री देवचन्द्र जी के पास कुरान का भी ज्ञान है ।

Nijanand App

खोजी बाई यवन को, कही रई बाई वासना जात ।
तब पूछी श्री जी साहिब जी यें, क्या इन में है अपनी बात ॥५३॥

क्यों कि श्री मेहराज ठाकुर के सामने ही खोजी बाई यवन स्त्री के अन्दर रई बाई की वासना जानकर श्री देवचन्द्र जी ने तारतम दिया था । इस बात को देखकर श्री जी साहिब ने पूछा कि क्या मुसलमानों में भी अपनी आत्मायें हैं ?

तब श्री देवचन्द्रजी यें कह्या, यामें कोई कोई वासना जान ।
और इनके कुरान में, है अपनी पहिचान ॥५४॥

तब श्री देवचन्द्र जी महाराज ने उत्तर दिया कि मुसलमानों में कोई-कोई ही अपनी आत्माएं हैं परन्तु इनके कुरान में अपनी सब बातें हैं ।

हम तो इन कुरान को, बहुत किया पढ़न ।
पर जाहिरी लोक जो, हमको न देवे लेवन ॥५५॥

मैंने तो कुरान को पढ़ने का बहुत प्रयत्न किया पर जाहिरी मुसलमानों ने मुझे कुरान पढ़ने नहीं दिया।

तुम्हारे आगे कहत हों, याके वास्ते सब ।
ए बात तुमसे होयेगी, लीला आगे होय जब ॥५६॥

पर तुम्हें इसलिए बता रहा हूं कि श्री राज जी महाराज मेरे तन में लीला करने के बाद जब तुम्हारे तन में बैठेंगे तो कुरान के सारे भेद तुम्हारे तन से ही खोलेंगे ।

और इसारतें कई धाम की, सो सुनके ग्रह लई तब ।
बीज मात्र इन लीला को, सो पायो उस बखत सब ॥५७॥

और परमधाम के पच्चीस पक्षों की भी थोड़ी-थोड़ी चर्चा, जो श्री देवचन्द्र जी सुनाते थे उसको उन्होंने अपने हृदय में रख लिया ।

नित यों चरचा सुनत हैं, मिलके दोऊ भ्रात ।
दोऊ प्रेम में भीगे रहें, करे मूल निसबत विख्यात ॥५८॥

इस तरह से दोनों भाई श्री गोवर्धन ठाकुर और श्री मेहेराज ठाकुर मिलकर चर्चा सुनते थे और आत्मिक सम्बन्ध को प्रधानता देकर प्रेम में भीगे रहते थे ।

Nijanand App

घर से चले दोऊ मिल के, आवे मिलकर साथ ।
बांध्यो चित अति हेत सों, दो नाते की बात ॥५९॥

चर्चा सुनने के लिए दोनों भाई साथ-साथ जाते थे और साथ ही मिलकर आते थे। एक दूसरे के प्रति बहुत घना प्रेम था क्योंकि एक तो सांसारिक सम्बन्ध से सगे भाई थे, दूसरा दोनों में परमधाम की आत्मायें थी।

तो एक दिन आये घर में, बड़ा भाई करत अस्नान ।
कह्या तुम बिगड़े दोऊ भाई, भये काम काज से अजान ॥६०॥

एक दिन दोनों भाई कुछ देरी से जब घर में लौटे तो बड़े भाई सांवलिया ठाकुर को कुछ अधिक कार्य भार करना पड़ा था। तब वे कुंए पर नहा रहे थे कि इतने में ही दोनों भाई घर पर आये। उनको देखकर सांवलिया ठाकुर बोले कि तुम दोनों भाई घर के काम काज से बेपरवाह हो गए हो।

सो सोहबत गांगजी से, और गुरू सोहबत ।
दोनों को निकालें सहर से, तब तुम सुधरो इत ॥६१॥

आज मैं पिताजी को कहकर जिस गुरू से तुम ज्ञान सुनते हो तथा जिस गांगजी भाई के घर चर्चा सुनते हो, उन दोनों को नौतनपुरी से निकलवा दूंगा। तब तुम दोनों को घर के काम काज की सुध आ जाएगी।

तब गुस्से होय दौड़े मारनें, मिलके भाई दोए ।
छिपाए माता ने घर में, सुनी आए पिता ने सोए ॥६२॥

अपने सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी एवं गांग जी भाई के प्रति अपमान के शब्द सुनकर दोनों को गुस्सा आ गया और अपने बड़े भाई को मारने के लिए टूट पड़े। सांवलिया ठाकुर कूदकर रसोई घर में माता जी के पास चले गये और माताजी ने उन्हें बचा लिया। रात्रि को श्री केशव ठाकुर जी जब घर आए तो माता श्री धनबाई जी ने उस दिन की सारी घटना कह सुनायी।

तब कही केसव ठाकुर ने, जिनकी तुम चरचा सुनत ।
तिन सुनी कान जी भट्ट सें, बांचे स्याम जी मंदिर जित ॥६३॥

दूसरे दिन प्रातः उठकर गोवर्धन ठाकुर और मेहराज ठाकुर को श्री केशव ठाकुर ने आदेश दिया कि कान्ह जी भट्ट, जो स्याम जी के मंदिर में चर्चा करते हैं, उनसे श्री देवचन्द्र जी ने भी चर्चा सुनी थी।

उतही चलके तुम सुनो, तब दियो जबाब इन इत ।
जो पूछें ताको देय जवाब, तो हम हमेसा बैठें तित ॥६४॥

तुम कान्ह जी भट्ट के पास जाकर चर्चा सुनो। तब दोनों भाइयों ने उत्तर दिया कि यदि कान्ह जी भट्ट हमारे प्रश्नों का उत्तर दे देंगे तो हम सदा ही उनके पास चर्चा सुनने जाया करेंगे।

Nijanand App

तब पिता ले चले तिन पे, वे बैठे जाय के ताहिं ।
कही भट्ट लड़के कछु पूछत, देयो जवाब चित दे आहिं ॥६५॥

तब पिता श्री अपने दोनों पुत्रों को लेकर स्याम जी के मंदिर में पहुंचे तथा कहा कि हे भट्ट जी ! ये मेरे दोनों पुत्र आपसे कुछ पूछना चाहते हैं। इनके प्रश्नों को चित्त देकर सुनिए तथा इनके संशय मिटाइये।

तब पूछी दोऊ भाई ने, भट्ट कितने गुन के लोक ।
तत्व कहो कितने सही, कितने प्रलय अलोक ॥६६॥

तब दोनों भाइयों ने मिलकर पूछा कि हे भट्ट जी ! इस संसार में कितने लोक हैं ? कितने गुण हैं? कितने तत्व हैं ? कितने प्रकार की प्रलय होती है ?

तीन गुन ते चौथो गुन नहीं, पाच तें छठो न तत्व ।
चौदह तें लोक नहीं पन्द्रहमों, और प्रलय चार है सत ॥६७॥

तब कान्ह जी भट्ट ने उत्तर दिया कि यहां सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुण तीन गुण हैं। चौथा गुण नहीं है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पांचों तत्व हैं। अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल ये नीचे तथा मृत्युलोक, भूर्लोक, भुवर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक, ये सात ऊपर हैं। इनसे भिन्न कोई पंन्द्रहवा लोक नहीं है। नित्य, नैमित्तिक, प्राकृत तथा महाप्रलय ये चार प्रकार की प्रलय होती है।

तो कहो पारब्रह्म रूप जो, सो रहत कौन ठौर ।
कही क्षीर समुद्र अक्षय वट पर, रहे अंगुष्ठ मात्र न और ॥६८॥

तब दोनों भाइयों ने पूछा कि जब आत्यन्तिक महाप्रलय में चौदह लोक, पांच तत्व, तीन गुण का लय (नाश) हो जाता है तो उस समय पारब्रह्म जो अखंड अविनाशी स्वरूप हैं, वह किस ठिकाने में रहते हैं ? तब भट्ट जी ने उत्तर दिया कि उस समय पारब्रह्म क्षीर सागर में वट के पेड़ के एक पत्ते के ऊपर अंगूठे के बराबर रूप धारण कर रहते हैं। उस समय उनका और कोई ठिकाना नहीं रह जाता है।

चौथो गुण तुम न कह्यो, छठो तत्व न होय ।
लोक कह्यो नहीं पन्द्रहमों, रहे कौन ठौर वह सोय ॥६९॥

तब दोनों भाइयों ने कहा कि हे भट्ट जी ! आपने चौदह लोक, पांच तत्व और तीन गुण कहे हैं जिनका महाप्रलय में नाश हो जाता है तो क्षीर सागर किस ठिकाने पर होता है ?

Nijanand App

तब भट्ट की सुध बुध गई, कही ए जवाब ब्रह्मा से न होय ।
तब कही तहां पिता नें, तुम्हारे चित्त आवे करो सोय ॥७०॥

इस बात को सुन कर श्री भट्ट जी हैरान हो कर मन में सोचते हैं कि क्षीर सागर तो पाताल में है जिसका महाप्रलय में नाश हो जाता है तो मैं इनके प्रश्न का क्या उत्तर दूं। आपके पुत्रों के प्रश्न का उत्तर, मैं तो क्या ब्रह्मा जी भी नहीं दे सकते हैं। तब पिता श्री ने भट्ट जी की यह बात सुन कर अपने पुत्रों से कहा कि आज से तुम्हारा मन जहां करे, वहां जा कर चर्चा सुन सकते हो।

या भांत नवतन पुरी में भई, दोऊ भाई से चरचा कै ठौर ।
सो बीतक कहा लों कहों, भयो प्रेम दोऊ में जोर ॥७१॥

इस तरह नवतनपुरी में इन दोनों भाइयों से कई प्रकार की चर्चा हुई। सो उन बातों का वर्णन कहां तक करूं। दोनों भाइयों का प्रेम दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया।

बरस चौबीस मास दस, ऊपर भये पांच दिन ।
तहां लो सोहबत रहे, बीच गिरोह मोमिन ॥७२॥

२४ वर्ष १० माह और ५ दिन दोनों भाई मिल कर सुन्दरसाथ में रहे।

सम्वत सत्रह सौ बारोत्तरे, भादों मास उजाला पख ।
चतुर्दसी बुधवार की, हुये दृष्टें अलख ॥७३॥

संवत् १७१२ भादो मास की सुदी चतुर्दसी बुधवार को श्री देवचन्द्र जी का धामगमन हो गया।

रहे लौकिक काम में, थे वजीर के कामदार ।
लौकिक में से जुदे हुये, रहे तरफ परवरदिगार ॥७४॥

संवत् १७१२ तक श्री मेहेराज ठाकुर ससांरिक कार्य में वजीर के कामदार का कार्यभार सम्भाल रहे थे। फिर सब ससांरिक कार्यभार छोड़ कर श्री राजजी महाराज की ही सेवा में आ गए।

महामति कहे ऐ मोमिनों, जिन पर हुआ म्याराज ।
सो खासल खास उम्मत हैं, तन मार डारत हक काज ॥७५॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज फरमाते हैं कि जिन पर धाम के धनी श्री राजजी महाराज की मेहर होती है, वे ही परमधाम के खासल खास मोमिन हैं। वे अपने आपको माया से पीठ देकर श्री राजजी महाराज के जागनी के कार्य में समर्पित हो जाते हैं।

(प्रकरण १३, चौपाई ५७८)

Nijanand App